आई एस एस एन 0971-9873

आई सी एम आर पत्रिका

वर्ष-25, अंक-2 फरवरी 2011

इस अंक में

- राष्ट्रीय प्रजनन स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान: उत्कृष्टता के पथ पर सतत अग्रसर 1
- परिषद के समाचार 15

संपादक मंडल

अध्यक्ष — डॉ विश्व मोहन कटोच
महानिदेशक
भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद
एवं सचिव, भारत सरकार
स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग

सदस्य — डॉ ललित कान्त
डॉ बेला शाह

प्रमुख, प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग — डॉ के. सत्यनारायण

संपादक — डॉ कृष्णानन्द पाण्डेय
डॉ रजनी कान्त

प्रकाशक — श्री जगदीश नारायण माथुर

राष्ट्रीय प्रजनन स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान : उत्कृष्टता के पथ पर सतत अग्रसर

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई सी एम आर) के महत्वपूर्ण संस्थानों में राष्ट्रीय प्रजनन स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान (एन आई आर आर एच) का एक प्रमुख स्थान हैं। पहले प्रजनन अनुसंधान संस्थान के नाम से ज्ञात यह संस्थान शोध, शिक्षा, प्रसार कार्यक्रमों और सेवाओं के माध्यम से लोगों के प्रजनन स्वास्थ्य को बेहतर बनाने की दिशा में कार्यरत है। यह संस्थान अब एक छत के नीचे मौलिक, चिकित्सीय, परिचालन और सामाजिक-व्यावहारिक अनुसंधान के एक उत्कृष्ट संगठन के रूप में विकसित हो चुका है। इस संस्थान को वैज्ञानिक रूप से प्रलेखित भारत के प्रथम टेस्ट ट्यूब शिशु के जन्म के लिए वैज्ञानिक आधार उपलब्ध कराने का श्रेय प्राप्त है। इसके अलावा, इस संस्थान को एलाइज़ा आधारित प्रथम सगर्भता पहचान किट विकसित करने तथा प्रजनन क्षमता के मूल्यांकन हेतु मूत्र पर आधारित स्वदेशी किटों को विकसित करने का भी श्रेय प्राप्त है। इस संस्थान द्वारा एक एंटीप्रोजेस्टिन के रूप में ओनाप्रिस्टोन के साथ संपन्न अध्ययनों के परिणामस्वरूप सप्ताह में प्रयुक्त एक गोली के रूप में मिफेप्रिस्टोन की संभाव्यता पर विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा किए जा रहे परीक्षणों का आधार बना, और इंजेक्शन द्वारा दी जाने वाली दवाइयों पर संपन्न शोधकार्य प्रमुख था जिसके आधार पर राष्ट्रीय परिवार कल्याण कार्यक्रम में सम्मिलित किए जाने की योजना है। इस संस्थान के वैज्ञानिक अब माइक्रोबीसाइड्स, प्रजनन स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले रोगजनों की पहचान करने के किटों, अस्थि सघनता के मूल्यांकन हेतु किटों, पुनर्जनन मेडिसिन के लिए बहु प्रभावकारी मूल कोशिकाओं (स्टेम सेल्स) तथा प्रजनन संबंधी विभिन्न विकारों के निदान हेतु नवीन आनुवंशिक आमापन विधियों को विकसित करने की दिशा में शोधरत हैं।

राष्ट्रीय प्रजनन स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान-इतिहास की नज़र से शैशवास्था में संस्थान : बीसवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध

राष्ट्रीय प्रजनन स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान की स्थापना स्वर्गीय डॉ शान्ता एस. राव द्वारा बढ़ती आबादी पर काबू पाने के लिए विधियां विकसित करने के उद्देश्य से की गई, भारत में वर्ष 1970 के दशक में आबादी में वृद्धि एक गंभीर समस्या थी। उनके कुशल नेतृत्व में न केवल संस्थान की शुरुआती समस्याएं दूर हुईं बल्कि प्रजनन प्रतिरक्षाविज्ञान और प्रजनन क्षमता नियमन के क्षेत्रों में इस संस्थान का महत्वपूर्ण योगदान सुनिश्चित हुआ है। उनकी दूरदर्शिता इतनी महत्वपूर्ण थी कि उनके कुछ सपने उनके उत्तराधिकारियों द्वारा साकार किए गए और कुछ पर अभी भी कार्य जारी हैं।

इस संस्थान का श्रीगणेश वर्ष 1954 में मुम्बई स्थित भारतीय कैंसर अनुसंधान केन्द्र में एक परिवार नियोजन यूनिट के रूप में हुआ और वर्ष 1963 में इसे सेठ जी.एस. मेडिकल कॉलेज, के.ई.एम अस्पताल परिसर में स्थानांतरित किया गया। इसे दिनांक 21 फरवरी, 1970 को वर्तमान परिसर में स्थानांतरित किया गया।

राष्ट्रीय प्रजनन स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान (पहले प्रजनन अनुसंधान संस्थान के नाम से ज्ञात) परिसर

वर्ष 2000 का मध्य दशक : अग्रसित होने की अवधि

वर्ष 2005 में संस्थान के भौतिक एवं वैज्ञानिक आयामों का विस्तार हुआ और इसे ''राष्ट्रीय प्रजनन स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान ''**(नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर रिसर्च इन रिप्रोडक्टिव हेल्थ-एन आई आर आर एच)**'' का नाम दिया गया । जीवन शैली, पर्यावरणी और अन्य कारकों, अवसरवादी संक्रमणों की उपस्थिति में एच आई वी के कारण उत्पन्न बंध्यता और अन्य प्रजनन संबंधी विकारों की बढ़ती घटनाओं; युवाओं और किशोरवय के यौन व्यवहार में आए भारी बदलाव से जुड़ी समस्याओं तथा उत्तरजीविता में वृद्धि से जुड़े आयु संबद्ध रोगों की उच्च घटनाओं के कारण स्वास्थ्य सुरक्षा के क्षेत्र में उत्पन्न नवीन चुनौतियों को देखते हुए यह जरूरी था। प्रजनन स्वास्थ्य से जुड़ी इन समसामयिक समस्याओं को दूर करने के लिए इस संस्थान ने विषाक्तविज्ञान, सहज प्रतिरक्षा, मूल कोशिका जैविकी, बायोइंफॉर्मेटिक्स, ट्रांसजेनिक्स और एच आई वी के क्षेत्रों में शोध कार्य का बीड़ा उठाया है और अपने मूलभूत ढांचे (इंफ्रास्ट्रक्चर) को उन्नत बनाया है । इस संस्थान के साथ-साथ अन्य संस्थानों के शोधकर्ताओं द्वारा अनेक आधुनिकतम उपकरणों का प्रयोग किया जा रहा है जिनमें इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप, कॉनफोकल माइक्रोस्कोप, फ्लो साइटोमीटर, रियल टाइम पी सी आर, सरफेस प्लाज़मोन रेज़ोनैंस, अमीनो एसिड एनालाइज़र, डी एन ए सीक्वेंसर, प्रोटिओमिक्स वर्क स्टेशन और हिस्टोलॉजी वर्क स्टेशन प्रमुख हैं ।

संस्थान द्वारा भारत में पहली बार इन वीट्रो फर्टिलाइज़ेशन (आई वी एफ) तकनीक का प्रयोग करते हुए मानव भ्रूण को विकसित किया गया ।

इस संस्थान के जी एम फड़के पुस्तकालय में प्रजनन स्वास्थ्य सुरक्षा के सभी पहलुओं से संबद्ध विषयों पर विशिष्ट पुस्तकों, जर्नलों, डाटाबेसेज़ और रिपोर्ट्स की उपलब्धता है।

उद्देश्य और उपलब्धियां

नैदानिक

भारतीय परिप्रेक्ष्य में बंध्यता से जुड़ी स्थितियों, जैसे कि बहुपुटीय डिम्बग्रंथि संलक्षण, एण्डोमीट्रिओसिस, परिपक्वतापूर्व डिम्बग्रंथि पात, विभिन्न जनन पथ संक्रमण, यौन संचारित संक्रमण, अस्थिसुषिरता, आदि के चिकित्सा प्रबंध के लिए अधिक सस्ती पहचान विधियों की

एन आई आर आर एच में उपलब्ध आधुनिकतम ए आर टी सुविधाएं : (क्लॉकवाइज़), मेटा एनालाइज़र, प्रोटिओमिक्स वर्क स्टेशन, सरफेस प्लाज़मोन रेज़ोनैंस, डी एन ए सीक्वेंसर, कॉनफोकल माइक्रोस्कोप, रियल टाइम पी सी आर और इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप

आवश्यकता है। इस प्रकार राष्ट्रीय प्रजनन स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकगण अपने शोध से चिकित्सा के क्षेत्र में अधिकतम लाभ पहुंचाने की दिशा में निरन्तर प्रयासरत रहे हैं । सगर्भता की पहचान करने के लिए एलाइज़ा विधि पर आधारित ''प्रेगलिज़ा (PREGLISA)" नामक एक सुविधाजनक 'डिप ऐण्ड रीड' स्ट्रिप परीक्षण विधि विकसित की गई है । प्रजनन से संबद्ध प्रमुख हॉर्मोनों के स्तरों की मात्रा ज्ञात करने की मूत्र आधारित विधियों के लिए विकसित प्रौद्योगिकियां उद्योग द्वारा स्वीकार कर ली गई हैं । हाल ही में, आई वी एफ ई टी अपनाने वाली महिलाओं में सगर्भता के बार-बार असफल होने के कारणों को ज्ञात करने के लिए भी प्रतिपिण्ड पर आधारित एक परीक्षण विधि विकसित की गई है । महिलाओं में पेल्विक शोथज रोगों, अस्थानिक सगर्भता और बंध्यता के पीछे सामान्यतया *क्लैमाइडिया ट्रैकोमैटिस* का हाथ होता है, इस संस्थान के शोधकर्ताओं ने इसकी पहचान के लिए भी पी सी आर आधारित एक स्वदेशी विधि विकसित किया है । इस संस्थान द्वारा रेसाज्युरिन रिडक्शन परीक्षण नामक एक परीक्षण विधि विकसित की गई है जिसके द्वारा शुक्राणु की गुणवत्ता का आसानी से मूल्यांकन किया जाता है। मानव शुक्राणुओं की असामान्यताओं की बारीकी से पहचान करने के लिए भी आमापन विधियां (एसेज़) उपलब्ध हैं ।

गर्भनिरोधक विधियों पर शोध : विकल्पों को और बढ़ाना

इस संस्थान के शोध कार्य प्रजनन क्षमता नियमन के लिए नवीन और उन्नत प्रौद्योगियों को विकसित करने, अन्य देशों में मौजूद नवीन विधियों की सुरक्षा, स्वीकार्यता एवं प्रभावकारिता का मूल्यांकन करने और उसके परिणामस्वरूप महिलाओं एवं पुरुषों के लिए विकल्पों को बढ़ाने पर केन्द्रित हैं । इस संस्थान द्वारा मुखीय एवं इंजेक्शन द्वारा प्रयुक्त गर्भनिरोधक विधियों पर अनेक भैषजिक अध्ययन किए गए हैं । अंतर्गर्भाशयी *(इंट्रायूटेरिन)* गर्भनिरोध युक्तियों और आपातकालीन गर्भनिरोध अर्थात ई सी *(इमरजेंसी कंट्रासेप्शन)* पर संपन्न शोध कार्य के परिणामस्वरूप राष्ट्रीय परिवार नियोजन कार्यक्रम में कॉपर टी 380 ए नामक एक आपातकालीन गर्भनिरोध युक्ति को सम्मिलित करने का मार्ग प्रशस्त हुआ है। यद्यपि, इंजेक्शन द्वारा प्रयुक्त गर्भनिरोधक विधियां अर्थात आई सी *(इंजेक्टेबल कंट्रासेप्टिव्स)* अभी राष्ट्रीय परिवार कल्याण कार्यक्रम में सम्मिलित नहीं की गई हैं, परन्तु NET-EN के

साथ प्रयोगकर्ताओं में इसकी उच्च स्वीकार्यता का पता चला है । इस आई सी को दो वर्षों की अवधि तक दो माह में एक बार प्रयोग किया जाता है । आपातकालीन गर्भनिरोध के विषय में बहुत कम जागरूकता को देखते हुए राष्ट्रीय प्रजनन स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान बृहन्मुम्बई नगर निगम के चिकित्सकों और नर्सों को प्रशिक्षित करने और आपातकालीन गर्भनिरोध पर शिक्षा सामग्री तैयार करने को प्रेरित हुआ जिनको आजकल राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य एजेंसियों द्वारा व्यापक रूप से प्रयोग किया जा रहा है । इस संस्थान द्वारा चिकित्सीय विधि द्वारा सगर्भता समापन (एम टी पी) अर्थात गर्भपात पर विगत एक दशक से किए जा रहे चिकित्सीय परीक्षणों से वर्ष 2002 में एन टी पी अधिनियम में संशोधन के लिए एक प्रेरणा मिली, और 7 सप्ताह से कम अवधि की सगर्भता के समापन के लिए एक विधि के रूप में मंजूरी प्राप्त हुई ।

बंध्यता : मूल तक पहुंचना

इस संस्थान द्वारा एक *सेकण्डरी रेफरल सेंटर* के रूप में ''प्रजनन एण्डोक्राइनोलॉजी एवं प्रजनन क्षमता क्लीनिक'' का संचालन किया जाता है जहां निम्न सामाजिक-आर्थिक आय वर्ग के बंध्य दम्पतियों की आवश्यकताएं पूरी की जाती हैं । प्रत्येक वर्ष 500 से अधिक बंध्य (संतान उत्पति में असमर्थ) दम्पतियों को परामर्श सेवाएं प्रदान की जाती हैं । इसके अलावा, अल्ट्रासोनोग्राफी, हॉर्मोन आमापन, सरवाइकल कैंसर की प्रारंभिक अवस्था में पहचान करने के लिए पैप स्मियर्स तथा शुक्राणु कार्य परीक्षण सहित शुक्राणु की जांच जैसी सुविधाएं प्रदान की जाती हैं। वर्तमान में जन्मजात एड्रीनल हाइपरप्लाज़िया, समय पूर्व ओवरी का कार्य रुकने और बहुपुटीय ओवरी सिण्ड्रोम (पी सी ओ एस) जैसी स्थितियों के लिए जिम्मेदार कारकों को ज्ञात करने के लिए आण्विक तकनीकें प्रयोग की जा रही हैं । अध्ययनों से पता चला है कि यदि पी सी ओ एस का इलाज न किया गया तो स्वास्थ्य पर हृदयरोग, टाइप-2 मधुमेह और लिपिड विकार जैसे दीर्घकालिक प्रभाव पड़ते हैं । जन्मजात एड्रीनल हाइपरप्लाजिया के लिए एक त्रुटिहीन नैदानिक परीक्षण विधि विकसित की गई है जिसकी सहायता से चिकित्सक बेहतर इलाज कर रहे हैं । कुछ जीनों में उत्परिवर्तनों की पहचान की गई है जिनकी पुरुषों और महिलाओं दोनों में बंध्यता में संभावित भूमिका हो सकती है । एण्डोमीट्रिओसिस की प्रारंभिक अवस्था में पहचान में ऑटो एंटीबॉडीज़ की भूमिका को ज्ञात करने के प्रयास किए जा रहे हैं ।

किशोरवय प्रजनन स्वास्थ्य

भारत की 35 प्रतिशत आबादी 10-24 वर्षीय आयु वर्ग की है । विगत दशक के दौरान किशोरवय में विवाह-पूर्व यौन संबंध स्थापित करने, टीनेज (13 से 19 वर्षीय) आयु वर्ग में संगर्भता और एच आई वी / एड्स सहित यौन संचारित संक्रमणों की घटनाएं बड़ी तेजी से बढ़ी हैं। समाज में अत्यन्त उपेक्षित इस पहलू पर केन्द्रित एक बृहत् किशोरवय स्वास्थ्य सुरक्षा कार्यक्रम का संचालन जारी है जिसका उद्देश्य समुदाय में एक अनुकूल परिवेश तैयार करना तथा गोपनीय ढंग से आवश्यकता पर आधारित प्रोत्साहक, निवारक, उपचारी और परामर्श सेवाएं उपलब्ध कराना है । एक छत के नीचे सूचना, परामर्श और चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए किशोरवय अनुकूल स्वास्थ्य केन्द्रों की स्थापना की गई है-शहरी मुम्बई में JAGRUTI और ग्रामीण करजात से MAITRI । किशोरवय प्रजनन और यौन स्वास्थ्य [एडोलेसेंट रिप्रोडक्टिव ऐण्ड सेक्सुअल हेल्थ (ARSH)] कार्यक्रम के लिए केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की आवश्यकताओं के अनुरूप अनुकूल स्वास्थ्य सुरक्षा प्रयास किया गया है । महाराष्ट्र राज्य में ARSH कार्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए राज्य सरकार को तकनीकी सहायता प्रदान की जा रही है ।

ARSH कार्यक्रम द्वारा जागरूकता

मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य : स्वस्थ मां और स्वस्थ शिशु

स्वस्थ मां और स्वस्थ शिशु प्रजनन स्वास्थ्य पैकेज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है । मातृ स्तन पान के माध्यम से शिशु द्वारा सेवन की गई औषधियों और कारकों की सुरक्षा का आकलन करने के लिए अध्ययनों की शुरुआत की गई । यह प्रदर्शित किया गया है कि दुग्ध स्रवण करने वाली महिलाओं द्वारा कम मात्रा में प्रो जे स्टो जें स जै से हॉर्मोनल कारकों और आइसोनियाज़िड जैसी क्षयरोग रोधी औषधियों के सेवन करने से स्तन्य दुग्ध की मात्रा और गुणवत्ता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता और इस तरह स्तनपान करने वाले शिशुओं के लिए ये औषधियां सुरक्षित हैं ।

मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य कार्यक्रम में सामुदायिक भागीदारी

प्रजनन स्वास्थ्य में पुरुषों की भागीदारी

प्रजनन स्वास्थ्य कार्यक्रमों में पुरुषों की सक्रिय भागीदारी अत्यन्त महत्वपूर्ण है । यह संस्थान कुछ प्रमुख क्षेत्रों में पुरुषों की भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए शोध कार्य और सामुदायिक कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से संबद्ध है, उन क्षेत्रों में सम्मिलित हैं : (अ) परिवार नियोजन में प्रजनन क्षमता के संबंध में पुरुषों के इरादे और उनकी सोच (गर्भनिरोध के लिए आवश्यकताओं की पूर्ति सहित); (ब) सुरक्षित मातृत्व अथवा नियोजित ढंग से माता-पिता बनने में भागीदारी; (स) जनन पथ संक्रमणों/यौन संचारित संक्रमणों एवं एच आई वी/एड्स का निवारण; तथा (द) लिंग भेद-भाव से जुड़ी हिंसा/यौन शोषण का निवारण । हाल ही में इस संस्थान ने बृहन्मुम्बई नगर निगम के सहयोग में ''प्रजनन स्वास्थ्य में पुरुषों की भागीदारी को बढ़ाने के लिए शहरी मलिन बस्तियों में इंटरवेंशंस'' शीर्षक से एक अध्ययन पूर्ण किया है। परिषद नियोजन सहित उत्तम प्रजनन स्वास्थ्य को सुनिश्चित करने के लिए पुरुषों की संबद्धता पर संपन्न इंटरवेंशन अनुसंधान से अच्छा प्रभाव प्रदर्शित हुआ है। इस प्रकार के कार्यक्रम के महत्व को देखते हुए इस संस्था द्वारा यह कार्यक्रम जारी है ।

वयोवृद्धि : अस्थिसुषिरता और रजोनिवृत्ति को समझना

देश में वृद्धों की आबादी का अनुपात बढ़ता जा रहा है । भारत में आठ पुरुषों में एक पुरुष और तीन महिलाओं में एक महिला में अस्थिसुषिरता अर्थात ऑस्टिओपोरोसिस की उपस्थिति पाई जाती है, इसे ध्यान में रखते हुए भारतीय महिलाओं में अस्थि खनिज सघनता

अर्थात बी एम डी *(बोन मिनरल डेंसिटी)* को ज्ञात करने के लिए एक नॉर्मोग्राम विकसित करने, चिकित्सीय विकल्पों का मूल्यांकन करने, आनुवंशिक संबंध को ज्ञात करने और अस्थिसुषिरता स्थिति की पहचान करने के लिए स्वदेशी किटों को विकसित करने की दिशा में प्रयास किए गए हैं ।

वृद्धावस्था से जुड़ी स्वास्थ्य समस्याओं की जांच

भारतीय परिप्रेक्ष्य में अस्थि टर्न ओवर चिन्हकों के लिए संदर्भ मानदण्ड स्थापित किए गए हैं । शोध से पता चला है कि भारतीय महिलाओं का बी एम डी अमरीकी महिलाओं की तुलना में 15 प्रतिशत कम है । यह भी पता चला है कि रजोनिवृत्ति के पश्चात लगभग एक तिहाई महिलाओं का बी एम डी 12 प्रतिशत कम होने के पीछे विटामिन डी में पॉलीमॉर्फिज़्म्स और एस्ट्रोजन रिसेप्टर जीनों जैसे आनुवंशिक कारणों का हाथ होता है । यह पाया गया है कि आहार और धूप सेवन से धूम्रपान एवं अल्कोहल सेवन के कारण अस्थि पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभावों से बचने में सहायता मिलती है।

यौन संचारित संक्रमणों एवं एच आई वी/ एड्स को शामिल करते हुए प्रजनन पथ संक्रमण : रोकथाम के प्रयास

यौन संचारित संक्रमणों तथा एच आई वी/एड्स को शामिल करते हुए प्रजनन पथ संक्रमणों के कारण होने वाले स्वास्थ्य भार को कम करने के लिए संस्थान द्वारा कई मोर्चों पर कार्य किया जा रहा है । मानव पैपिलोमा विषाणु तथा *क्लैमाइडिया ट्रेकोमेटिस* की पहचान के लिए संवेदनशील एवं विशिष्ट विधियां विकसित की गई हैं । जीवाणुजरोधी एवं एच आई वी रोधी क्रियाशीलता सहित प्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त नवीन अणुओं की पहचान के लिए भी प्रयास किए जा रहे हैं । ऐसे कुछ अणु हैं S_s ALF 24, RVF_x HbP, मैगाइनिन तथा निसिन। मानव कलेक्टिन, सर्फेकटेन्ट प्रोटीन डी (SP-D) के रीकॉम्बीनेन्ट रूपों का उनकी एच आई वी रोधी क्षमता के लिए पता लगाया जा रहा है । मानव स्पर्मेटोज़ुआ पर एक नवीन एच आई वी बन्धनकारी प्रोटीन की भी पहचान की गई है ।

यौन संचारित संक्रमणों को शामिल करते हुए प्रजनन पथ संक्रमणों की रोकथाम, नियंत्रण एवं प्रबन्ध पर राष्ट्रीय दिशानिर्देश के विकास हेतु वर्तमान में उपलब्ध RTI/STI प्रबन्ध प्रेक्टिसेस (व्यवहार) पर एक देशव्यापी सर्वेक्षण भी किया गया है । इन तकनीकी दिशा निर्देशों को राष्ट्रीय प्रजनन एवं शिशु स्वास्थ्य की द्वितीय प्रावस्था तथा राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यक्रम (NACP) की तृतीय प्रावस्था में लागू करने के लिए भारत सरकार द्वारा स्वीकृति प्रदान कर दी गई है । इसके पश्चात् प्रशिक्षण सामग्री जैसे ट्रेनर्स मैन्यूअल, ट्रेनीज़ मॉडयूल्स तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम विकसित किए गए जिनका राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यक्रम (NACP) तथा RCH कार्यक्रमों में प्रयोग किया जा रहा है ।

मूल कोशिका अनुसंधान : आशाजनक संभावनाएं

हाल के वर्षों में, मूल कोशिका चिकित्सा के द्वारा वैज्ञानिक समुदाय में अत्यधिक ऊर्जा का संचार हुआ है तथा अब तक असाध्य माने जाने वाले रोगों से ग्रस्त लोगों के लिए आशा का सूत्रपात हुआ है । संस्थान से सम्बद्ध वैज्ञानिकों द्वारा 2 मानव एम्ब्रियॉनिक कोशिका लाइन को सफलतापूर्वक विकसित किया गया है। इन मूल कोशिकाओं को वर्तमान में कार्डियोमाइसिटीज़ एवं अग्न्याशयी प्रोजीनिटर्स में विभेदीकृत किया जा रहा है जिसका उद्देश्य हृद्वाहिकीय रोग एवं मधुमेह जो देश में प्रमुख रोग भार हैं का उपचार करना है । संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा प्रथम बार वयस्क गोनेडल (जननग्रंथि) ऊतकों से प्लूरीपोटेन्ट ES-लाइक मूल कोशिकाओं की उपस्थिति को रिपोर्ट किया गया। इन कोशिकाओं को बंध्यता के उपचार के लिए प्रयोग किया जा सकता है तथा ये पुनरुद्धारक चिकित्सा के लिए मूल कोशिकाओं का एक बेहतरीन आटोलोगस स्रोत भी साबित हो सकती हैं ।

विशेषीकृत सुविधाओं के लिए एक नोडल केन्द्र

जैवसूचना : बाइट्स से बेडसाइड

परिषद द्वारा वर्ष 2006 में NIRRH का चयन जैव सूचना केन्द्र स्थापित करने के लिए एक स्थल के रूप में किया गया । केन्द्र की स्थापना के पश्चात पर्यवेक्षकों द्वारा उनके अनुसंधान कार्यक्रम में कम्प्यूटर सम्बद्ध साधनों के व्यापक प्रयोग को सुविधा प्रदान हुई है । केन्द्र में कार्यरत वैज्ञानिकों द्वारा एन्टीमाइक्रोबियल पेप्टाइड्स पर एक विस्तृत डाटाबेस जिसे CAMP (कलेक्शन ऑफ एन्टीमाइक्रोबियल पेप्टाइड्स) के नाम से जाना जाता है, का विकास किया गया है । केन्द्र द्वारा विकसित इलेक्ट्रॉनिक रोगी रिकार्ड प्रणाली को पास के पब्लिक अस्पतालों द्वारा विभिन्न संलक्षणों से सम्बद्ध रोगी सूचना को प्राप्त करने, जमा करने एवं उसका विश्लेषण करने के लिए प्रयोग किया जा रहा है । केन्द्र द्वारा क्षमता निर्माण के उद्देश्य से जैवसूचना के विभिन्न प्रयोगों जो आधुनिक जैविकी में नया विषय है पर अन्य संस्थानों के शिक्षाविदों एवं अनुसंधान कर्ताओं को शिक्षित करने के लिए नियमित रूप से कार्यशालाएं एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं ।

राष्ट्रीय पूर्वचिकित्सीय (प्रिक्लीनिकल) प्रजनन एवं आनुवंशिक विषविज्ञान केन्द्र : सुरक्षित औषधियों के लिए

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग तथा भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद द्वारा संयुक्त रूप से संस्थान पर एक राष्ट्रीय पूर्वचिकित्सीय प्रजनन एवं आनुवंशिक विषविज्ञान केन्द्र की स्थापना की गई है । इस केन्द्र का मुख्य उद्देश्य बेहतर प्रयोगशाला प्रेक्टिसेस को अपनाकर टेस्ट कम्पाउन्ड्स (परीक्षण यौगिकों) का पूर्वचिकित्सीय प्रजनन एवं आनुवंशिक विषविज्ञानी मूल्यांकन करना; टेस्ट कम्पाउन्ड के होने वाले विषविज्ञानी प्रभाव की प्रक्रिया की व्याख्या करना; पब्लिक एवं प्राइवेट सेक्टर को सेवा प्रदान करना; मानव संसाधन विकास; तथा सूचना का प्रसार करना है । इस केन्द्र द्वारा प्रजनन विषाक्तता के लिए प्रौद्योगिकियां जिसमें प्रजनन क्षमता अध्ययन, भ्रूणविषाक्तता, टेरेटोजनकता, प्रसव पश्चात (पोस्ट नेटल) विकासात्मक विषाक्तता तथा आनुवंशिक विषाक्तता जिसमें क्रोमोसोमल एब्रेशन की पहचान के लिए परीक्षण शामिल हैं, स्थापित की गई हैं । केन्द्र द्वारा प्रजनन एवं

संस्थान के पथ प्रदर्शक निदेशक .....

डॉ शान्ता एस. राव
(1977-1979)

डॉ बद्री नाथ सक्सेना
(1980-1981)

डॉ टी.सी. आनन्दकुमार
(1982-1991)

अनिल आर. शेठ
(1992-1993)

डॉ हरबंश एस.जुनेजा
(1994-2000)

डॉ चन्दर पी. पुरी
(2002-2007)

डॉ संजीव डी. खोलकुटे
(2009 से अब तक)

साक्षात्कार

राष्ट्रीय प्रजनन स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान की गतिविधियों और उपलब्धियों पर संस्थान के निदेशक डॉ संजीव डी. खोलकुटे के साथ एक साक्षात्कार के मुख्य अंश

प्रश्न : राष्ट्रीय प्रजनन एवं शिशु स्वास्थ्य (आर सी एच) कार्यक्रम में एन आई आर आर एच के क्या प्रमुख योगदान रहे हैं ?

डॉ खोलकुटे : गर्भनिरोधक विधियों के विकल्पों को विस्तारित करने के क्षेत्र में देश भर में दो माह में एक बार इंजेक्शन द्वारा प्रयुक्त गर्भनिरोधक - नॉरएथिस्टेरोन एनैंथेट (NET-EN) का मूल्यांकन किया गया । प्राप्त परिणाम उत्साहजनक होने के साथ-साथ राष्ट्रीय स्वास्थ्य कल्याण कार्यक्रम में इंजेक्शन द्वारा प्रयुक्त गर्भनिरोधकों के विकल्प को सम्मिलित करने हेतु नीति निर्माताओं/कार्यक्रम प्रबंधकों के लिए उपयोगी थे ।

इस संस्थान ने जनन पथ संक्रमणों/यौन संचारित संक्रमणों अर्थात RTI_s/STI_s के निवारण पर प्रोग्राम मैनेजर्स के लिए ऑपरेशनल गाइडलाइंस विकसित करने में योगदान दिया है । देश के 6 स्थलों पर फील्ड परीक्षण के परिणामस्वरूप *ट्रेनर्स गाइड, ट्रेनीज़ मॉड्यूल्स* और प्रशिक्षण कार्यक्रम विकसित किए गए। राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (NRHM) के अंतर्गत NACP-3 और RCH-2 कार्यक्रमों में इनका प्रयोग किया जा रहा है ।

यह संस्थान आई सी एम आर के टास्क फोर्स अध्ययनों में भी हिस्सा ले रहा है जिनका उद्देश्य माइक्रोबीसाइड्स सहित एच आई वी के निवारण हेतु क्लीनिकल परीक्षणों के लिए स्थलों की पहचान और उनका चयन करना है ।

मातृ मर्त्यता/अस्वस्थता के क्षेत्र में इस संस्थान द्वारा महाराष्ट्र के नासिक जिले में महिलाओं में लम्बी अवधि से चली आ रही प्रसूति से जुड़ी जननांगी फिस्टुला, जननांगी प्रोलैप्स (नीचे की ओर खिसकना (भ्रंश)), मूत्र रोकने की अक्षमता, सेकण्डरी इनफर्टिलिटी (द्वितीयक बंध्यता) जैसी स्थितियों की उपस्थिति और उनके निर्धारकों का आकलन किया गया । प्रजनन स्वास्थ्य में पुरुषों की भागीदारी को बढ़ाने के लिए परिचालन अनुसंधान किए गए जिसके परिणामस्वरूप मुम्बई की शहरी मलिन बस्तियों में यौन संचारित संक्रमणों और सर्वाइकल कैंसर पर जानकारी बढ़ाने और दम्पतियों को इलाज कराने के लिए प्रेरित करने में मदद मिली है ।

प्रश्न : वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बंध्यता एक बढ़ती समस्या है । इस क्षेत्र में क्या प्रगति हुई है ?

डॉ खोलकुटे : भारतीय आबादी में बंध्यता अर्थात इनफर्टिलिटी की बढ़ती घटनाओं को देखते हुए एन आई आर आर एच द्वारा वर्ष 1980 में ही एक विशेष इनफर्टिलिटी क्लीनिक की शुरुआत की गई । इस क्लीनिक में आने वाले बंध्य दम्पतियों को निःशुल्क चिकित्सीय और प्रयोगशाला सेवाएं प्रदान की जाती हैं । इस क्लीनिक में महिलाओं और पुरुषों में बंध्यता के चिकित्सा प्रबंध के लिए अपने संस्थान के ही विशेषज्ञ उपलब्ध हैं । इस संस्थान को वैज्ञानिक रूप से डॉक्यूमेंटेड (प्रलेखित) भारत के प्रथम टेस्ट ट्यूब शिशु के जन्म से संबद्ध होने का श्रेय प्राप्त है । अध्ययनों से यह भी प्रदर्शित किया गया है कि यदि *पॉलीसिस्टिक ओवरी सिण्ड्रोम* (PCOS) का इलाज नहीं कराया जाए तो स्वास्थ्य पर हृद्वाहिकीय रोग, टाइप-2 मधुमेह और लिपिड विकारों जैसी दीर्घकालिक स्थितियां पैदा हो सकती हैं। महिलाओं में एण्डोमीट्रिओसिस की स्थिति में ऑटोइम्यून की अनुक्रिया को प्रदर्शित करने वाले विशिष्ट एण्डोमीट्रियल प्रोटीनों की पहचान की गई है । इस स्थिति की शुरुआती अवस्था में पहचान करने में इन प्रोटीनों की उपयोगिता का मूल्यांकन करने के प्रयास किए जा रहे हैं । बंध्यता और अस्थानिक सगर्भता के लिए जिम्मेदार *क्लैमाइडिया ट्रैकोमैटिस* की पहचान करने के लिए पी सी आर पर आधारित एक स्वदेशी विधि विकसित की गई है । इस संस्थान में पुरुष बंध्यता के चिकित्सा प्रबंध हेतु एक विशेष एण्ड्रोलॉजी क्लीनिक कार्यरत है ।

प्रश्न : PCOS और इसके चिकित्सा प्रबंध में इस संस्थान की क्या भूमिका रही है ?

डॉ खोलकुटे : इस संस्थान में एक विशेष फर्टिलिटी क्लीनिक का संचालन किया जाता है । हमने देखा है कि लगभग 60 प्रतिशत मामलों में महिला से जुड़ी जटिलताएं जिम्मेदार होती हैं और इनकी लगभग आधी संख्या में *पॉलीसिस्टिक ओवरियन सिण्ड्रोम* का हाथ पाया जाता है। महिलाओं में PCOS की स्थिति एनओवुलेटरी इनफर्टिलिटी (डिम्बाक्षरणी बंध्यता) का एक प्रमुख कारण होती है । इस स्थिति के उत्पन्न होने में हाइपरएण्ड्रोजिनीमिया और इंसुलिन प्रतिरोध की एक प्रमुख भूमिका होती है । इस पाथवेज़ के लिए विशिष्ट जीनों का विश्लेषण करने से इस विकार के प्रति प्रवृत्ति का पता लगाने तथा इससे संबद्ध आण्विक प्रक्रियाओं को ज्ञात करने में मदद मिल सकती है। PCOS सहित महिलाओं से प्राप्त फॉलीकुलर तरल का प्रोटिओमिक अध्ययन करने से इस रोग से जुड़े प्रमुख कारकों की पहचान करने तथा चिकित्सा/निदान के लिए पहचान किए गए प्रोटीनों का उपयोग करने में मदद मिल सकती है।

इस क्लीनिक में आने वाले दम्पतियों में PCOS की बढ़ती व्यापकता को देखते हुए बहुविषयक प्रयास के साथ PCOS के चिकित्सा प्रबंध के लिए एक विशिष्ट क्लीनिक की शुरुआत करने की योजना तैयार की गई। जिसमें मेडिकल एण्डोक्रोइनोलॉजिस्ट, डाइटीशियन (आहार

विशेषज्ञ), कॉस्मेटिक विशेषज्ञ, मेडिकल मनोरोग विशेषज्ञ, आदि की सेवाएं ली जाएंगी ।

प्रश्न : प्रजनन स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं को दूर करने में स्टेम सेल (मूल कोशिका) अनुसंधान कितना उपयोगी है ?

डॉ खोलकुटे: स्टेम सेल जैविकी दल के शोध प्रयासों के परिणामस्वरूप हाल ही में वयस्क गोनैड्स (जनन ग्रंथि) में एम्ब्रियॉनिक-लाइक मूल कोशिकाओं की पहचान हुई है जिससे युग्मक जनन (गैमीटोजिनेसिस) की प्रक्रिया में नई गहन जानकारी मिली है । इन कोशिकाओं का आधार लाल रुधिर कोशिकाओं से भी छोटा होता है । इन पर भावी शोध के परिणामस्वरूप कैंसर से उपचारित रोगियों में रजोनिवृत्ति, बंध्यता तथा प्रजनन क्षमता के पुनः स्थापन के विषय में बेहतर जानकारी प्राप्त होगी । हमारे शोध प्रयास आई वी एफ क्लीनिकों से प्राप्त किए गए अतिरिक्त मानव भ्रूणों से प्राप्त मानव भ्रूणीय स्टेम (hES) कोशिकाओं पर भी केन्द्रित होंगे ।

प्रश्न : शोध परिणामों को जनसाधारण तक पहुंचाने की दिशा में एन आई आर आर एच के क्या प्रयास हैं ?

डॉ खोलकुटे : इस संस्थान द्वारा प्रजनन स्वास्थ्य के क्षेत्र में फील्ड आधारित चिकित्सीय और परिचालन अनुसंधान किए जाते हैं । समुदाय पर आधारित अध्ययनों से जन सामान्य में यौन और प्रजनन स्वास्थ्य से जुड़े पहलुओं पर जागरूकता फैलाने और जानकारी बढ़ाने में मदद मिलती है । इन अध्ययनों से किशोरवय, युवा दम्पतियों, एच आई वी की उपस्थिति वाले व्यक्तियों तथा पेशेवर यौन कर्मियों द्वारा सेवाओं की मांग करने और उन्हें सहायता उपलब्ध कराने में मदद मिलती है । हमारे अध्ययनों की पहुंच मुम्बई के लिए महाराष्ट्र के विभिन्न जिलों के जनजातीय क्षेत्रों तक हो गई है । हमारे संस्थान द्वारा किशोरवय प्रजनन स्वास्थ्य और गर्भनिरोध के विभिन्न पहलुओं पर स्थानीय भाषाओं में शिक्षा सामग्री विकसित की गई है जिससे यह संस्थान जन साधारण से सीधे जुड़ गया है । समुदाय में किसी प्रकार के शोध के लिए पंचायत सदस्यों, सरपंच के साथ-साथ समुदाय से जुड़े शिक्षकों, अभिभावकों और स्वास्थ्य सेवा प्रदानकर्ताओं को सुग्राही बनाने की आवश्यकता है । इस प्रकार हमारे शोध परिणाम समुदाय के सभी हिस्सों तक पहुंच जाते हैं ।

प्रश्न : इस संस्थान ने गर्भनिरोध के विकल्पों के लिए शहरी और ग्रामीण दोनों ही क्षेत्रों के लोगों में जागरूकता पैदा करने के लिए क्या प्रयास किए हैं ?

डॉ खोलकुटे : इस संस्थान द्वारा 3 कि.मी. की परिधि में पेरीफेरल (परीसरीय) क्लीनिकों का संचालन किया जाता है जिनमें एक बाई जेरबाई वाडिया शिशु अस्पताल में तथा दो नाइगांव और अभ्युदय नगर स्थित समुदाय आधारित क्लीनिक सम्मिलित हैं। इन क्लीनिकों में गर्भनिरोध से जुड़ी तरह-तरह की सेवाएं प्रदान की जाती हैं, साथ में लोगों को गर्भनिरोध के तरह-तरह के विकल्पों के विषय में जानकारी भी दी जाती है। पुरुषों के लिए विशेष क्लीनिक में गर्भनिरोध से जुड़ी पुरुषों की जरूरतों सहित प्रजनन स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की जाती हैं। ग्रामीण क्षेत्र करजात स्थित सार्वजनिक स्वास्थ्य सुविधाओं से जुड़े किशोरवय अनुकूल आठ केन्द्रों के माध्यम से किशोरवय आबादी की यौन और प्रजनन स्वास्थ्य से जुड़ी जरूरतें पूरी की जाती हैं । इसके अलावा फाकलैण्ड स्थित रक्षा क्लीनिक द्वारा पेशेवर यौन कर्मियों की प्रजनन स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याएं दूर की जाती हैं । नुक्कड़ नाटकों की मदद से भी प्रजनन स्वास्थ्य से जुड़ी विभिन्न समस्याओं पर जागरूकता पैदा की जाती है ।

प्रश्न : आपकी भावी योजनाएं किन क्षेत्रों में काम करने की हैं ?

डॉ खोलकुटे : राष्ट्रीय प्रजनन स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान ने विभिन्न प्रजनन अंगों में अभिव्यक्त अणुओं पर जानकारी को विस्तारित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, इनमें सम्मिलित हैं - वृषण (टेस्टिस), डिम्बग्रंथि (ओवरी), इपीडिडिमिस, गर्भाशय । हमारा मानना है कि इन अणुओं के कार्य को ज्ञात करना जरूरी है जिससे प्रजनन संबंधी विभिन्न विकारों की चिकित्सा अथवा चिकित्सा संबंधी कार्यक्रमों के लिए लक्ष्यों की पहचान करने की दिशा में मार्ग प्रशस्त हो सके, और आने वाले वर्षों में यह हमारी प्राथमिकता होगी ।

निर्धारित अवधि से पहले प्रसव, बार-बार गर्भपात होने से जुड़े पुरुष एवं महिला संबद्ध कारक, एण्डोमीट्रियल हाइपरप्लाज़िया, एण्डोमीट्रियम, ओवरी, गर्भाशय-ग्रीवा और प्रोस्टेट कैंसर, वयस्क काल में शुरुआत होने वाले भ्रूणीय रोग, जननांगी क्षयरोग तथा पुरुष जनन पथ की जन्मजात असामान्यताएं जैसी विभिन्न स्थितियों पर ध्यान देने की जरूरत है । इन विकारों की उत्पत्ति के कारणों को ज्ञात करने पर बल दिया जाएगा, इसके लिए अंतर्जीव विधि से उपयुक्त नॉन-ह्युमन प्राइमेट मॉडलों का प्रयोग किया जाएगा ।

ओवरी द्वारा सामान्य रूप से कार्य करने में असमर्थता जैसे प्रजनन विकारों के इलाज के लिए कोशिका आधारित चिकित्सा हेतु सिद्धान्तों के प्रमाण को स्थापित करने की दिशा में भी प्रयास किए जाएंगे ।

आनुवंशिक विषविज्ञान के विभिन्न पहलुओं, जन्तु हैण्डलिंग तथा उनके मानवों में प्रयोग, GLP आदि पर 6 हैण्ड्स ऑन कार्यशालाएं आयोजित की गईं । जिसमें देश भर से 150 से अधिक लोगों ने भाग लिया । केन्द्र द्वारा इन्डस्ट्री एवं एकेडमिया की साझेदारी में औषधि विकास तथा अन्य सम्बद्ध अनुसंधान कार्यक्रमों को सहायता प्रदान करने के लिए प्रयास किए जाते हैं। इस दिशा में केन्द्र द्वारा विभिन्न उद्योगों एवं शैक्षणिक संस्थानों के लिए 7 परियोजनाएं सफलतापूर्वक पूर्ण की गई ।

राष्ट्रीय प्राइमेट ब्रीडिंग एवं अनुसंधान केन्द्र : रोगजन मुक्त जन्तु संसाधनों के लिए

मानव रोगों पर अनुसंधान के लिए मानव शरीरक्रियाविज्ञानी एवं/अथवा विकृतिविज्ञानी स्थितियों के सिम्युलेशन की आवश्यकता होती है । गैर मानव प्राइमेट (NHP) जन्तु जैसे बन्दर, मर्मोसेट्स इन स्थितियों को करीब तक प्रदान करते हैं । हालांकि, काफी समय से

संस्थान क्लीनिक द्वारा प्रदान की जाने वाली परिवार नियोजन और बंध्यता प्रबंधन संबंधी सेवाएं

वैज्ञानिक समुदाय द्वारा यह महसूस किया गया है कि मानव रोग सम्बद्ध अनुसंधान लम्बे समय तक बाहर से पकड़े गए जन्तुओं पर जारी नहीं रखा जा सकता, पहले तो इन प्रजातियों की गिरती संख्या के कारण तथा दूसरे उनकी आयु, पारिवारिक स्थिति (पेडिग्री) तथा स्वास्थ्य स्थिति पर सूचना की अनुपब्लब्धता के कारण । इसलिए संस्थान द्वारा मुम्बई के बाहरी इलाके में 25 एकड़ के क्षेत्र में एक प्राइमेट केन्द्र स्थापित करने के प्रयास किए गए, जहां बन्दरों को रोगमुक्त स्थिति में उत्पन्न किया जाएगा । एक बार पूर्ण रूप से कार्यात्मक हो जाने की स्थिति में प्रस्तावित प्राइमेट केन्द्र मानव स्वास्थ्य एवं रोग के NHP मॉडेल्स के विकास हेतु बेहतर अनुसंधान अवसर प्रदान करेगा ।

समाज सेवाएं

संस्थान अपने सामाजिक दायित्व के प्रति सचेत है तथा स्वास्थ्य सुरक्षा सेवा के वितरण की बढ़ी हुई प्रभावशीलता हेतु माडेलिटीज़ (रूपात्मकता) के विकास पर अनुसंधान में प्रयासरत है । साथ-साथ प्रजनन स्वास्थ्य के महत्व में विभिन्न सामाजिक प्रेक्टिसेस की तरफ लोगों के ज्ञान, आचरण एवं सोच के आकलन का भी पता लगाया जा रहा है ।

संस्थान द्वारा 3 परिसरीय क्लीनिक्स; एक अस्पताल आधारित क्लीनिक (बाई जेर बाई बाल-चिकित्सालय) तथा 2 समुदाय आधारित क्लीनिक्स (नईगाम तथा अभुदया नगर) चलाए जाते हैं । इस क्लीनिकों से लाभ लेने वाले लोगों की कुल संख्या प्रतिवर्ष लगभग 4000 है । इन अनुसंधान क्लीनिकों की शक्ति लगभग शत प्रतिशत फॉलो अप तथा बेहतर रिपोर्ट बिल्डिंग तथा परामर्श का बैक-अप है । एक समुदाय आधारित क्लीनिक 55 वर्ष से ज्यादा पुराना है तथा परिवार नियोजन से प्रजनन स्वास्थ्य जिसमें रजोनिवृत्ति स्वास्थ्य सेवाएं शामिल हैं प्रदान कर रहा है । दूसरा क्लीनिक सप्ताहिक 'स्पेशल क्लीनिक फॉरमेन' है - जो पुरुषों के लिए प्रजनन स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करता है । संस्थान पर 2 अन्य विशेषज्ञ क्लीनिक भी हैं वे हैं :- प्रजनन अंतःस्रावीविज्ञान एवं प्रजनन क्षमता क्लीनिक (रिप्रोडक्टिव एन्डोक्रॉइनोलॉजी एण्ड फर्टीलिटी क्लीनिक) तथा अन्य पुरुष बंध्यता क्लीनिक । परियोजना मोड में, रामटेक्डी, परेल पर पॉलीसिरिटक ओबिरियन सिंड्रोम (बहुपुटीय डिंभग्रंथि संलक्षण) पर बल देते हुए एक एडोलिसेन्ट फ्रेन्डली क्लीनिक तथा करजात पर जन स्वास्थ्य सुविधा सहित 8 एडोलिसेन्ट फ्रेन्डली केन्द्रों की स्थापना के द्वारा महाराष्ट्र सरकार द्वारा प्रेरित किशोरवय स्वास्थ्य के सुधार में संस्थान द्वारा शुरू किए गए अनुसंधान प्रयासों की पहचान का पता लगता है । फाकलैण्ड रोड पर स्थापित रक्षा क्लीनिक सफलतापूर्वक पेशेवर यौन कर्मियों की प्रजनन स्वास्थ्य समस्याओं पर बल दे रहा है ।

शिक्षण एवं ज्ञान की साझेदारी

संस्थान को प्रजनन स्वास्थ्य अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र के लिए डब्ल्यू एच ओ सहयोगी केन्द्र के रूप में पहचाना गया है। साथ-साथ इसकी पहचान प्रजनन स्वास्थ्य के विभिन्न पहलुओं में विशेषज्ञ प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए सेन्टर ऑफ एक्सेलेन्स के रूप में भी की गई है। संस्थान द्वारा बंध्यता तथा प्रजनन विकारों के प्रबन्ध, अल्ट्रासोनोग्राफी, प्रजनन पथ संक्रमण की कोशिकाविज्ञानी पहचान आदि जैसे क्षेत्रों में नियमित प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है ।

संस्थान एप्लाइड बायोलॉजी, लाइफ साइंसेज़, जीवरसायन एवं जैवप्रौद्योगिकी में एम.एससी. तथा पीएच डी डिग्री प्रदान करने के लिए मुम्बई विश्वविद्यालय के साथ सम्बद्ध है । अब तक कुल 63 विद्यार्थियों को एम.एससी. तथा 149 को पीएच डी डिग्री प्रदान की गई है । वर्तमान में 72 लोग डॉक्टेरेल डिग्री के लिए कार्य कर रहे हैं । संस्थान द्वारा ग्रीष्म एवं शीतकाल में छुट्टियों के दौरान अन्य संस्थानों तथा विश्वविद्यालयों के ग्रेजुएट विद्यार्थियों को प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

संस्थान पूर्ण रूप से स्वास्थ्य सुनिश्चित करने के लिए जारी प्रयासों में सक्रिय योगदान हेतु प्रयासों को बढ़ाने के लिए अपनी जिम्मेदारियों से अवगत है । संस्थान द्वारा विगत 40 वर्षों से प्रजनन स्वास्थ्य अनुसंधान क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया गया है । यह प्रजनन जैविकी के प्रमुख रहस्यों के हल के लिए अपने प्रयास जारी रखेगा तथा प्रजनन शरीरक्रियाविज्ञान एवं विकृतिशरीरक्रियाविज्ञान से सम्बद्ध घटनाओं की बेहतर समझ के लिए अपने को सुसज्जित करेगा । संस्थान द्वारा विभिन्न स्वास्थ्य सुरक्षा सेवाओं के लिए विकसित मॉडेलों की पुनराकृति (रिप्लेकेशन) के लिए सुपरवाइज़री (पर्यवेक्षी), मॉनीटरिंग एवं तकनीकी सहायता प्रदान करना जारी रखा जाएगा । ऐसी आशा है कि प्रजनन विकारों की रोकथाम, निदान एवं उपचार के लिए विधियों के विकास के लिए किए गए प्रयास के द्वारा आने वाले वर्षों में अत्यधिक लाभ होंगे ।

प्रस्तुतिः डॉ के.एन. पाण्डेय, वैज्ञानिक 'डी' एवं डॉ रजनी कान्त, वैज्ञानिक 'डी', भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद मुख्यालय, नई दिल्ली ।

परिषद के समाचार

परिषद के विभिन्न तकनीकी दलों/समितियों की निम्नलिखित बैठकें नई दिल्ली में सम्पन्न हुईः

अस्थिरोग के क्षेत्र में परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	11फरवरी, 2011
बायोमेडिकल (जैवआयुर्विज्ञान) अनुसंधान (रिसर्च) बोर्ड की बैठक	15 फरवरी, 2011
भारत में एच आई वी धनात्मक महिलाओं एवं पुरुषों में प्रजनन क्षमता आवश्यकताओं की समझ के द्वारा एच आई वी की रोकथाम को बढ़ावा देने पर बैठक	15 फरवरी, 2011
स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान को मान्यता प्रदान करने के लिए दिशानिर्देशों को तैयार करने हेतु बैठक	15 फरवरी, 2011
स्वास्थ्य प्रणाली अनुसंधान प्रभाग की टास्क फोर्स बैठक	17-18 फरवरी, 2011
एच आई वी/एड्स एवं यौन संचारित रोगों पर परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	21 फरवरी, 2011
शोधवृत्ति पर विशेषज्ञ दल की बैठक	21 फरवरी, 2011

राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियों में परिषद के वैज्ञानिकों की भागीदारी

कोलकाता स्थित राष्ट्रीय हैज़ा तथा आंत्ररोग संस्थान के निदेशक डॉ जी.बी.नायर ने हैज़ा पर यूनाइटेड नेशंस के एक स्वतंत्र पैनल के सदस्य के रूप में बांग्लादेश, यूनाइटेड स्टेट्स एवं हैती का भ्रमण किया (1 फरवरी से 15 मार्च, 2011) ।

डिब्रूगढ़ स्थित क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र के वैज्ञानिक 'सी' डॉ एस.ए.खान एवं डॉ. बी. बोर्काकोटी ने उभरने वाले रोगों एवं निगरानी कार्य पर वियना, आस्ट्रिया में सम्पन्न अंतर्राष्ट्रीय बैठक (IMED), 2011 में भाग लिया (4-7 फरवरी, 2011) ।

नई दिल्ली स्थित विकृतिविज्ञान संस्थान की वैज्ञानिक 'ई' डॉ पूनम सलोत्रा ने लिमा, पेरू में सम्पन्न FP7 परियोजना के फ्रेम में वैज्ञानिक बैठक में भाग लिया (7-12 फरवरी, 2011) ।

पुणे स्थित राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान के वैज्ञानिक 'डी' डॉ बी.वी. तन्डले ने ओटावा, कनाडा में सम्पन्न अंतर्राष्ट्रीय इंफ्लुएंज़ा सीरम व्यापकता बैठक में भाग लिया (9-10 फरवरी, 2011) ।

अहमदाबाद स्थित राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य संस्थान के निदेशक डॉ पी.के. नाग ने जेनेवा, स्विट्ज़रलैण्ड में सम्पन्न वैश्विक व्यावसायिक त्वचा रोग कार्यशाला (22-23 फरवरी, 2011) तथा ICD में व्यावसायिक स्वास्थ्य पर वैश्विक कार्यकारी दल की प्रथम बैठक में भाग लिया (24-25 फरवरी, 2011) ।

समाचार पत्रों के पंजीकरण नियम 1956 के नियम 8 के अन्तर्गत
आई सी एम आर पत्रिका के स्वामित्व तथा अन्य मुद्दों से संबंधित विवरण

प्रकाशन	भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, अंसारी नगर, नई दिल्ली -110 029
प्रकाशन की अवधि	मासिक
मुद्रक का नाम	श्री जगदीश नारायण माथुर
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, अंसारी नगर, नई दिल्ली -110 029
प्रकाशक का नाम	उपर्युक्त
राष्ट्रीयता	
पता	
सम्पादक का नाम	डॉ कृष्णानन्द पाण्डेय
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, अंसारी नगर, नई दिल्ली -110 029

मैं, जगदीश नारायण माथुर यह घोषणा करता हूं कि ऊपर दिए गए तथ्य मेरी जानकारी एवं विश्वास के अनुसार सत्य हैं।

ह. जे.एन. माथुर
प्रकाशक

आई सी एम आर पत्रिका भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की वेबसाइट www.icmr.nic.in पर भी उपलब्ध है

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद्

सेमिनार/संगोष्ठियां/कार्यशालाएं आयोजित करने के लिए परिषद द्वारा आंशिक वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है, वित्तीय सहायता के लिए निर्धारित प्रपत्र पर पूर्णतया भरे हुए केवल उन्हीं आवेदन पत्रों पर विचार किया जाएगा जो सेमिनार/संगोष्ठी/कार्यशाला आदि के आरम्भ होने की तारीख से कम से कम चार महीने पूर्व भेजे जाएंगे।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के लिए मैसर्स रॉयल ऑफसेट प्रिन्टर्स,
ए–89/1, नारायणा औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110 028 से मुद्रित। पं. सं. 47196/87